यह कहानी उस युवक की कहानी है जिसने समाज से अपराध के कोढ़ का खात्मा करने
का बीड़ा उठाया। यह बीड़ा उठाने वाला हाथ है उस किशोर का जो, आसमान में चमक रहे ध्रुव
तारे के समान, अपराध खत्म करने की अपनी प्रतिज्ञा पर अटल है। और जिसका नाम है -

सुपर कमांडो ध्रुव

(58) प्रतिशोध की ज्वाला (15)

© RAJA POCKET BOOKS 1988

अपराधियों का यह काल कहां से आया? इसका उत्तर या तो आई० जी० शाहन जानते हैं या फिर लुट का दिल; जिसमें अब तक धधक रही है -

प्रतिशोध की ज्वाला

सम्पादक : मनीष चन्द्र गुप्त
कथा एवं चित्र : अनुपम सिन्हा

दरअसल इस कहानी की शुरुआत, आज से अठारह साल पहले 'जुपिटर सर्कस' से होती है।
जुपिटर सर्कस
जहां अपने-अपने फन में माहिर कलाकार अपनी आश्चर्यजनक कलाओं से जनता का मनोरंजन करते हैं।
जैसे छुरेबाज रंजन
खट
जिसके चाकू जब हवा में उछलते हैं तो दर्शकों की सांसें गले में ही रुक जाती हैं।
सिंह मास्टर शेरखान!
जिसके चाबुक की एक फटकार पर खूंख्वार शेर कुछ भी कर गुजरने को तैयार हो जाते हैं।
निशानेबाज सुलेमान!
जो आंख पर पट्टी बांधकर भी उड़ती चिड़िया की आंख को निशाना बना सकता है!
मोटर साईकल सवार पवन!
जिसका कारनामा देखते-देखते कई दर्शक दांत से अपनी उंगलियां काट खाते हैं।
स्ट्रांगमैन हरक्युलिस!
जिसका जैसा नाम है, वैसा ही काम!

परंतु इन सबके बावजूद सर्कस का मुख्य आकर्षण है - राधा और श्याम के झूले पर करतब।
ऐसे में जरा सी भी चूक का अर्थ है - एक निश्चित और दर्दनाक मौत!!
- परंतु ऐसे खतरनाक करतबों को दिखाते समय ये कलाकार क्या सोचते रहते हैं? आइए सुनें!
र--राधा! मैं बहुत दिनों से तुमसे एक बात कहना चाहता हूं!
तो सोच क्या रहे हो? शो खत्म होने से पहले ही कह डालो!
राधा! राधा!! म मैं तुमसे (गहरा) प्यार करता हूं और...
'और' क्या? आज कह ही डालो!
और... तुमसे शादी करना चाहता हूं...
धम
...तु...तुम तैयार हो?...
पर इससे पहले कि श्याम, राधा का जवाब सुन पाता
पंडाल तालियों के शोर से गूंज उठा।
तुमने क्या कहा? म...मैं सुन नहीं पाया।
मैंने कहा...

हां!
सच!
हां, ध्रुव! तुम इतने डरपोक हो, यह मुझको पहले नहीं पता था!
दरअसल, राधा, यह बात कहना भूले पर करतब दिखाने से भी ज्यादा मुश्किल है!
ऐसा क्या!
- तो इस तरह उस संबंध की शुरुआत हुई जो जल्द ही...
...पति-पत्नी के संबंधों में बदल गई।
और इसी पवित्र संबंध ने शीघ्र ही एक हृष्ट-पुष्ट पुत्र को जन्म दिया।
देखो, श्याम! हमारे बेटे की आंखें कैसे चमक रही हैं?
हां, राधा! इसका नाम भी हम एक चमकते सितारे पर ही रखेंगे!
उत्तर का सबसे चमकीला सितारा, ध्रुव!
एक बच्चे के आने से पूरे जुपिटर का माहौल ही बदल गया।
नन्हा ध्रुव सिर्फ सर्कस के कलाकारों का ही नहीं, जानवरों की भी आंखों का तारा था।
मासूम जानवर अपने खाने का हिस्सा बचाकर ध्रुव के लिए ले आते।
ओह! नहीं सबीना!

और सर्कस का मालिक जैकब तो जान छिड़कता था ध्रुव पर!
आजा, आजा, बेटा!
क्या कहा? और से बोलो!
गुर्रर...गुर्र गुर गुर!!
खेलने चलो?
अच्छा, ठीक है! लेकिन शाम को खेलेंगे! अभी मां नाराज़ी!
पांच साल का होते-होते ध्रुव कई कलाओं में माहिर होने लगा था।
घबराओ मत! वह गिरेगा नहीं!
रस्सी पर चलना उसके लिए खेल है!
छुरेबाज़ रजन को सबसे ज्यादा भरोसा था, ध्रुव पर!
?
वाह! वाह!! सिर्फ आधा इंच की दूरी पर!
खटाक
सुलेमान को भी दांतों तले उंगली दबानी पड़ी।
यह तो मेरा भी बाप निकलेगा!
धांय
जो शेर, बाघ, शेरखान तक की बात नहीं मानते थे,
वे ध्रुव के इशारे पर अपनी जान दांव पर लगा देते थे।

परन्तु रस्सी के झूले पर करतब सीखना सबसे ज़्यादा कठिन काम होता है। इसके लिए ध्रुव को तब तक इंतज़ार करना पड़ा, जब तक वह तेरह वर्ष का नहीं हो गया।
शाबाश, बेटे! पैरों को जितना अधिक मोड़ सकोगे, कलाबाज़ी खाना उतना ही आसान होगा!
मोटरसाईकिल सीखने का भी यही समय था।
बहुत अच्छा...
...उछलते वक्त बदन को और आगे झुकाया करो–
– अपने बदन और पैरों को खास तरीके से मोड़ो तो हवा में ही मोटरसाईकल को मोड़ सकते हो!
हां, ऐसे!
अब सिर्फ हरक्युलिस से ध्रुव को सीखना बाकी था।
...ताकत बढ़ाने के लिए कुछ खास व्यायाम ज़रूरी हैं...
...लेकिन अधिकतर करतबों के पीछे कुछ खास गुर होते हैं!...
जैसे सिर से ईंट तोड़ना! ऐसे!
इसमें सिर्फ एक खास बात है!...
कड़ड़ड़
...और धीरे-धीरे ध्रुव ने इस क्षेत्र में भी महारथ हासिल कर ली।–
और इसके साथ ही ध्रुव के सीखने का समय खत्म हो गया–

अब समय था ध्रुव के आश्चर्यजनक करिश्मों को जनता के सामने पेश करने का!
धांय
फड़ फड़ फड़
और ध्रुव ने अपने गुरुओं को निराश नहीं किया –
जनता ध्रुव के करिश्मों को देखकर झूम उठी।
कड़ड़ड़ब्रूमम
ध्रुव का हर कारनामा मौत को चुनौती देता हुआ सा था –
ध्रुव के करतबों ने 'जुपिटर सर्कस' को एक बार फिर ख्याति के शिखर पर ला खड़ा किया।
जुपिटर सर्कस का मालिक ध्रुव को पाकर अपने आप को दुनिया का सब से भाग्यशाली व्यक्ति समझ रहा था।

- लेकिन जैकब की निश्चिंतता के साथ दूसरे सर्कसों के मालिकों की मुसीबतें बढ़ती आ रही थीं।
जैसे कुंदनपुर में चल रहे 'ग्लोब सर्कस' की!
बॉस, इस नाथू ने आज फिर 'शैतान' को मांस का एक टुकड़ा ज्यादा दिया!
तड़ाक्
क्यों बे नाथू! कमीने, हमने तुझको जानवरों पर नज़र रखने के लिए रखा है...
...या इनको तगड़ा करने के लिए! ...
मांस की उस बोटी का पैसा क्या तेरा बाप देगा? बोल!
मा-मालिक! वो-'शैतान' भूख से रो रहा था... तो...
तो?...
ग... गलती हो गई, मालिक! माफ कर दीजिए!...
तूने हमारा बहुत नुकसान किया है, नाथू!...
जुबिस्को! इस से उस बोटी का दाम वसूल कर लो!
न... नहीं, मालिक!
रहम कीजिए!
भयभीत नाथू पलटा, लेकिन तभी जुबिस्को का बलिष्ठ मुक्का उसके आ लगा -
धड़ाक
और इससे पहले कि उसके खुले मुंह से चीख निकलती
जुबिस्को का दूसरा करारा वार उसपर पड़ चुका था।
इस बार चीखने का कोई मौका न था।
भड़ाक
क्योंकि नाथू का मस्तिष्क धीरे-धीरे अंधेरे में डूबता जा रहा था।

अरे! यह तो बेहोश हो गया, बॉस!
च-च-च! सिर्फ दो घूंसों में!! बड़ा कमजोर निकला!
अह!
बेचारे को 'शैतान' की बड़ी चिंता थी! जीते-जी तो बेचारा उसकी सेवा नहीं कर पाया!
शायद मर कर सेवा कर पाए!
हा... हा हा! मैं समझ गया, बॉस! ही ही ही ही... हो हो!
यू आर जीनियस, बॉस!
हा हा ही ही ही... (खौं खौं) हा हा हा! ओफ, पेट में दर्द हो गया हंसते, हंसते!
ले, बेटे शैतान!
तेरा खाना आ गया!
आज वह हड्डी तक चबा जाने के मूड में था
हा... हा हा!
शैतान ने पिछले चार सालों में एक बार भी पेट भरकर नहीं खाया था।
आTTTTTSSS..

बेचारा नाथू!...पैर फिसलने से शेर के पिंजरे में गिर पड़ा! और मर गया!
हा हा हा! हो हो हो हो!!
...कन बॉस इतना खुश नहीं था। -
आज के सभी शो की आमदनी का क्या हाल रहा, जिंगो?
है, बॉस!
अब तो हमारे पास जानवरों का चारा खरीदने के लिए भी पैसे नहीं हैं!
अब कल पता नहीं क्या होगा!
क्या बात है, समझ नहीं आता! अब कोई 'ग्लोब सर्कस' देखने आता ही नहीं है!
जरूर कोई हमारे सर्कस का नाम बदनाम कर रहा है।
अगर उसका सुराग... हैं!
शायद हमारा आखिरी शो खत्म हो गया!
हुंह! यह भी कोई सर्कस था?...
हाँ! एकदम बकवास!
पापा, वह जो पिछले साल सर्कस आया था न... क्या नाम था उसका?
जुपिटर सर्कस!
?
अरे! उसकी और इस 'ग्लोब सर्कस' की क्या तुलना?
हाँ! यह 'ग्लोब सर्कस' तो जुपिटर के पैरों की धूल तक नहीं है!

अब न तो दुबारा यह सर्कस देखने आऊंगा और न ही किसी दोस्त को आने दूंगा!
मैं भी!
गर्र्र्र
जुपिटर! जुपिटर!! पागल कर दिया है मुझको इस नाम ने!
कभी हमारा सर्कस टॉप पर था! नोटों में लोटता था मैं!!
छनाक
लेकिन जब से यह जुपिटर सर्कस आया है...
...हम दाने-दाने को मुहताज हो गए हैं...
...ग्लोब सर्कस के जिंदा रहने की सिर्फ एक ही सूरत है...
...और वह है जुपिटर सर्कस की मौत!...
...तुम जाओ और जुबिस्को को मेरे पास भेज दो!
उस रात ग्लोब सर्कस के मालिक और जुबिस्को के बीच में जो गुप्त बातचीत हुई -
उससे एक ऐसा खूनी दौर शुरू हो गया जिसमें ग्लोब और जुपिटर, दोनों सर्कस बरबाद हो गए।
कुछ दिन बाद - राजनगर से थोड़ी दूर, एक बड़े से मैदान में लगे जुपिटर सर्कस का तंबू रात के आखिरी शो के बाद खाली हो गया था।
और जल्दी ही सारे सर्कस की बत्तियां धीरे-धीरे बुझने लगीं।
जुबिस्को को इसी का इंतजार था।
वह तेजी से एक अंधेरे कोने की तरफ बढ़ा -

अब मैं पेट्रोल छिड़कना शुरू करता हूं!
समय बहुत कम है!
और मिनटों में जुबिस्को ने पूरे सर्कस को पेट्रोल के घेरे में कैद कर दिया
चलो! यह शुभकार्य तो समाप्त हुआ!
ठक्
अब सारे 'जुपिटर वासी' नींद में ही गॉड को प्यारे हो जाएंगे!
हा हा हा!
लेकिन कुछ लोग जाग भी रहे थे -
अरे! यह पेट्रोल ...
?
ऊऊ ऊऊ!
ओफ़! बाल - बाल बचा! वर्ना इसके चिल्लाते ही सारा खेल खत्म हो जाता!
अब सावधानी से काम करना पड़ेगा! ...
जुबिस्को ने दूसरा कनस्तर उठाया -
और धीरे से तंबू के अंदर झांका -
मैदान साफ़ है! अंदर कोई भी नहीं है यही मौका है!

जुबिस्को को सर्कस के तंबू में घुसते किसी ने भी नहीं देखा।
उसके बलिष्ठ हाथों में पेट्रोल से भरा दूसरा कनस्तर खिलौने की तरह झूल रहा था।
वह चुपचाप सर्कस के रिंग में पहुंचा।
यहीं से शुरू करना सबसे अच्छा रहेगा!
परन्तु जुबिस्को की किस्मत उस के साथ नहीं थी। -
श्याम अपने झूले की नई रस्सियां बांध रहा था।
कौन हो तुम?
रुक जाओ!
जुबिस्को समझ गया कि अब ज्यादा वक्त नहीं है।
धड़ाक्
उसने एक झटके में कनस्तर रिंग के फ़र्श पर पलट दिया।
महक श्याम के नथुनों तक पहुंची और वह लपका।
पेट्रोल!
लेकिन तब तक देर हो चुकी थी।
आग! आग!! भागो!

जुबिस्को बाहर की तरफ़ भागा।
कनस्तर ले चलूं! बॉस ने कहा था कि कोई सबूत मत छोड़ना!
परंतु अगले ही पल श्याम की लात उसकी पीठ पर घोड़े की दुलत्ती की तरह पड़ी।
आह!!
अंदर ध्रुव अपने कपड़े बदलने ही जा रहा था कि-
आग!?
वह तेज़ी से बाहर भागा-
और उसकी नज़र सबसे पहले जुबिस्को और अपने पिता श्याम पर पड़ी।
नहीं!
ताकत में जुबिस्को श्याम से दुगना था।
उसका हाथ घूमा। श्याम की कनपटी पर एक करारी चोट पड़ी और वह होश खो बैठा।

जुबिस्को ने श्याम को हवा में उठा लिया -
और इससे पहले कि ध्रुव आग की लपटों को पार करके उन तक पहुंच पाता-
बेहोश श्याम को जुबिस्को ने जलती आग में झोंक दिया।
श्याम पल भर में राख हो गया।
नहीं!!
चीख सुनकर वह ध्रुव की तरफ़ पलटा।
आग की रोशनी में चमकता हुआ जुबिस्को का चेहरा, संसार का क्रूरतम चेहरा लग रहा था।
परंतु अब पकड़े जाने की संभावनाएं बढ़ती आ रही थीं।
जुबिस्को बाहर की तरफ़ भागा-
और ध्रुव उसके पीछे लपका।
उसकी सोचने समझने की ताकत गुम हो चुकी थी। अब उसके दिमाग में सिर्फ़ एक ही शब्द बार-बार गूंज रहा था- बदला!!
दोनों के बीच में अब भी काफ़ी दूरी थी -
कनस्तर क्यों लाद लाए? फेंको इसे!
जुबिस्को ने बाहर इंतज़ार कर रही कार का दरवाज़ा खोला-
और कार एक झटके के साथ दौड़ पड़ी।
ध्रुव भी बिना कोई वक़्त खोए अपनी मोटर-साईकल की तरफ़ लपका।

और उसकी स्पेशल मोटर साईकल आग की दीवार के ऊपर से कूदती हुई जुबिस्को की कार के पीछे लग गई।
धड़ धड़ धड़
अंदर - जुपिटर सर्कस में मौत का तांडव मचा था-
आग की खूंखार लपटें हर किसी को अपनी लपेट में लेने के लिए लपक रही थीं।
मौत की दहशत से भाग रहे शेरों और हाथियों के पैरों तले कई कलाकार कुचले जा रहे थे।
लेकिन इन सबसे अंजान ध्रुव की मोटर साईकल मानो हवा में उड़ती आ रही थी।
ध्रुव अब भी हमारे पीछे लगा है, थांड!
चिंता मत करो, जुबिस्को! यह काम तुम मुझपर छोड़ दो

मेरा निशाना स्टार-सर्कस तक में कभी नहीं चूका! नमूना हाज़िर है!
एक पिस्तौल धारी हाथ कार से बाहर निकला।
ध्रुव पल भर में समझ गया कि निशाना उसका सिर है।
धाँय!
एक धमाका हुआ।
साथ ही साथ ध्रुव की मोटर साईकल हवा में उछली।
और मोटर-साईकल एक झटके से पलट गई।
गोली और ध्रुव के सिर के बीच में मोटर-साईकल का अगला पहिया आ गया -
ज़मीन पर असहाय पड़ा ध्रुव, अंधेरे में गुम होती कार की लाल टेल-लाईटों को देखता रह गया।
तभी उसको जलते जुपिटर-सर्कस का ध्यान आया।
वह उठा- और पलट कर सर्कस की तरफ़ भागने लगा।

- लेकिन ध्रुव के वहां पहुंचने से पहले ही सब कुछ खत्म हो चुका था।
नहीं। ये नहीं हो सकता।
- और साथ ही खत्म हो गए थे, जुपिटर सर्कस के सभी कलाकारों के साथ, ध्रुव के माता-पिता
नुचक!
बिल्कुल अकेला।

यह ध्रुव की प्रतिज्ञा है
शायद भगवान स्वयं ध्रुव की इस प्रतिज्ञा से दहल उठे थे।
और तेज़ी से एक तरफ चल पड़ा।

दूसरी तरफ – 'ग्लोब सर्कस' के लिए यह खुशी मनाने का दिन था।
शाबास! शाबास जुबिस्को! मुझको तुमसे यही उम्मीद थी!..
..पर तुमको किसी ने देखा तो नहीं? क्यों?
ब..बा.बॉस! वह.. ध्रुव ने हमको देखा था!
तब तो वह तुमको पहचान गया होगा!...
..और यहां पर आना ही होगा!
आप चिंता मत कीजिए, बॉस! जुबिस्को के रहते आप..
गार्ड... गार्ड!
यस, बॉस!
देखो, सर्कस के चारों तरफ़ कड़ा पहरा लगा दो! खूंख्वार डॉग-थोन लिए आदमी तैनात कर दो!...
..तो उसको बेझिझक गोली मार दी जाए!
ओ.के. बॉस!
और कोई भी अजनबी अगर अंदर घुसने की कोशिश करे...

ध्रुव जुबिस्को को पहचान गया था।
जरूर यह मेरे स्वागत का इंतजाम हो रहा है!
हाई टेंशन केबल!
तार के दूसरे सिरे पर पहुंच कर ध्रुव एक क्षण को पलटा-
लेकिन इस वक्त मेरे दिमाग में इसका एक और दहलाने वाला उपयोग आ रहा है!..
सर्कस' की बिजली सप्लाई होती है!

थोड़ी देर पहले हुई बारिश से ज़मीन अभी तक गीली थी।
पल भर में 'हाई-वोल्टेज' की बिजली चारों तरफ़ फैल गई।
पहरेदारों और खूंख्वार जानवरों को मुंह तक खोलने का मौका नहीं मिला।
जल्दी ही सभी पहरेदार और शेर-चीते गीली ज़मीन पर बेहोश पड़े थे।
अंदर-
यह क्या हुआ जुबिस्को? बिजली कैसे चली गई?
अभी 'इमरजेंसी लाईट' जलाकर देखता हूं, बॉस! ...
लगता है केबल टूट गया है, बॉस!
केबल टूट गया?
पर कैसे?
जवाब में एक सर्द आवाज़ गूंजी-
?
मैंने तोड़ा है!
क... कौन?

ध्रुव!
हां! तुम्हारी मौत, ध्रुव!
?
मैं इसको देखता हूं, बॉस!
जुबिस्को दो कदम आगे बढ़ा-
आह!
और चार कदम पीछे आ गिरा।
इससे पहले कि जुबिस्को संभल कर उठ पाता-
ध्रुव ने उसको वापस ज़मीन पर लिटा दिया।
धड़ाम
हैं! गार्ड! गार्ड!!
बेकार में गले को तकलीफ़ मत दो! तुम्हारी मदद को कोई नहीं आएगा! ...
तुम्हारे सारे आदमी आराम फर्मा रहे हैं! ...
... उन सबका दिमाग़ ठिकाने लगाने के लिए मुझे उनको बिजली के झटके देने पड़े हैं! ...
आह!

अब तुमको बचाने कोई नहीं आएगा!
भगवान भी नहीं!
लेकिन तभी ऊपर से एक फंदा गिरा -
- और -
शाबास, बांड! एकदम परफेक्ट!
?
- अब मैं सबसे पहले तुम्हारे थप्पड़ का जवाब दे दूं!
ऐसे!
आह!
धम्म
हा हा हा! बच्चे, इस खेल का मुझको तुमसे ज्यादा तजुर्बा है! ...
... अब मैं तुमको बताता हूं कि बदला कैसे लिया जाता है!
'शैतान' को लाया जाए!
शीघ्र ही -
बेटे ध्रुव, इस खूंखार शेर को देख रहे हो न? इसी का नाम 'शैतान' है!
यह तीन दिन में सिर्फ एक बार खाना खाता है! ...
क्लिक
... और आज इसके उपवास का तीसरा दिन है!
जुबिस्को, खोल दे शैतान को!

भूख से बेचैन शैतान ध्रुव पर छलांग मारने के लिए झुका -
गर्रर्र
गुर्र्र्र.. गर्र्र... गर्र्र..
कि तभी - ध्रुव के गले से एक हल्की सी घुरघुराहट निकली।
गुर्र्र गुर्र गर्र्र
गुर्र्र गर्र्र
वह कुछ सुन रहा था। -
दहाड़
अगले ही पल - उसके दोनों अगले पंजे ध्रुव के कंधों पर थे -
और तेज दांत रस्सी पर -
शैतान ने एक झटका दिया -
और रस्सी के कई टुकड़े हो गये।
यह क्या!?
जानवर कितना भी खूंखार हो, लेकिन ध्रुव की प्यार की बोली समझता है!
?

और बॉन्ड ज़मीन पर आ गिरा -
धम
धमम
लेकिन इसी बीच ध्रुव का ध्यान एक क्षण के लिए जुबिस्को पर से हट गया -
अब तुम्हारी बारी ...
और जुबिस्को ने इसका पूरा फायदा उठाया।
ध्रुव की गरदन एक फौलादी शिकंजे में फंस गई।
?
- और उसकी गर्दन की हड्डियां कड़कने लगीं।
एक झटका लगा और ध्रुव के गले से चीख निकल गई।
ध्रुव की यह चीख शैतान का गुस्सा जगाने को काफी थी।
अआ!!!!!!!SSS!
क्योंकि वह समझ गया था कि ध्रुव उसका दोस्त है।
और जुबिस्को उसका दुश्मन !
वह जुबिस्को पर टूट पड़ा -
तड़
जुबिस्को की दर्दनाक चीखें रात के सन्नाटे में गूंजने लगीं।
आ
आह

ध्रुव अब बॉस की ओर पलटा -
द .. दूर रहो मुझसे!
.. पास मत आना !
मुझे कोई नहीं पकड़ सकता! कोई नहीं! ...
भयभीत बॉस बाहर की तरफ भागा -
ओह! बाहर ज़मीन में अब तक करेंट दौड़ रहा होगा!
रुक जाओ!
- लेकिन देर हो चुकी थी -
बॉस का पांव गीली ज़मीन में पड़ चुका था -
आSSSSSSSS...
ध्रुव ने सावधानी से हूटा के बल उठाकर सुरक्षित ऊंचाई पर टांग दिया।
उसका प्रतिशोध पूरा हो चुका था।
तीनों अपराधी अपने आप मौत के आगोश में समा गए थे।
रात बीत चुकी थी।
ध्रुव धीरे-धीरे उगते सूरज की तरफ बढ़ चला -

अगले दिन.
श्री राजन मेहरा एस० पी० (सिटी)
हमने तुम्हारी कहानी की जांच के बाद सही पाया है, ध्रुव! जुपिटर सर्कस के बाहर पड़े दोनों कनस्तरों पर...
जुबिस्को की ही उंगलियों के निशान थे!
मैं तुम्हारी अक्ल की दाद देता हूं!...
कमाल का सबूत लाए तुम! वाह!!
धन्यवाद, एस० पी० अंकल!
एक बात और!... जुपिटर सर्कस के मालिक मि० जैकब ने सर्कस का दुर्घटना बीमा तुम्हारे नाम से कराया था!...
!
...यानि आज से तुम पचास लाख रुपयों के मालिक हो! पर एक बात तो बताओ!...
...इतने पैसों से आखिरकार तुम करोगे क्या?
इस दुनिया से अपराध का खात्मा! मैंने जुपिटर सर्कस की जलती चिता पर कसम खाई है कि मैं इस संसार से अपराध का नाम मिटा दूंगा!
वाह, बेटे, वाह! मुझे पूरा यकीन है कि इस काम में भगवान तुम्हारी पूरी मदद करेंगे!
मैं और पुलिस डिपार्टमेंट भी!
धन्यवाद, अंकल!

हो है! अब तुम
यह तो मैंने सोचा ही नहीं!
पर मैंने सोच लिया है! मैं एक ऐसे सज्जन को जानता हूं जिनके सिर्फ एक बेटी है; अकेला!...
...उनको ठीक तुम्हारे जैसे बहादुर बेटे की इच्छा थी!
मैंने उनको फोन कर दिया है! उनके परिवार वाले तुम्हारा ही इंतजार कर रहे होंगे!
यह रहा उनका घर!
पर अंकल, पता नहीं मैं उनको पसंद आऊं या नहीं! और आपने उनका नाम तो मुझे बताया ही नहीं!
नॉनसेंस!
तुमको नापसंद करने की कोई वजह भी तो हो!
और हां, उनका नाम है...
राजन मेहरा! और वे इस शहर के सीनियर एस० पी० हैं! यानि...
अंकल, आप!?
राजन मेहरा
ट्रिर्र्र्र र्र्र्र्र
हां, बेटे, तुम्हारे इस नए घर में तुम्हारा स्वागत है!
वेलकम, ध्रुव भईया!
ध्रुव कुछ न बोल सका! क्योंकि खुशी के मारे उसका गला रुंधा था!